भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–10, अंक–3–4	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा–10.00
शनिवार, 25 अप्रैल' 87	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे	प्रति अंक : 1.00

गुरुहरि की जन्मजयंती के अवसर पर

सम्पूर्ण मानव जाति पर अपनी अप्रतिम करुणा बरसाने 206 वर्ष पहले पूर्ण पुरुषोत्तम श्री सहजानन्द स्वामी धरातल पर आये और धरती को 'अखंडित सौभाग्यवती' का वरदान देकर सनाथ किया। यह स्वामिनारायण सम्प्रदाय की एक अनोखी विशेषता है कि–इतने वर्षों के बाद भी वह ज्योति अपने आप में एक नित्य नया प्रकाश लिए गुणातीतभाव को पाये युगपुरुषों द्वारा निरंतर प्रज्जवलित ही रही....क्षण भर भी मंद नहीं हुई। इन युगपुरुषों की कल्याण योजना में जो भी मुमुक्षु ने तन, मन, आत्मा का सम्पूर्ण समर्पण करके अपना अस्तित्व मिटा दिया उस पर प्रत्यक्ष स्वरूपों ने खूब अन्तर से राजी होकर अपना वारसा सौंप दिया। ब्र.स्व. योगीजी महाराज की पारखी दृष्टि ने गुणातीत पीढ़ी के वारिसदार प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी और प.पू. महंत स्वामीजी को चुने।

4 मई–प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्म जयंती.....अपने जीवन में गुरुहरि योगीजी महाराज के आने के बाद उन्होंने अपनी प्रतिभा, बुद्धि–सभी कुछ प्रभु के चरणों में–ब्रह्मयज्ञ में याहोम कर दिया। अपना कुछ भी प्रिय नहीं गिना, केवल एक गुरुहरि योगीजी महाराज को ही राजी करने की भावना से दास का दास बनने में जीवन की सच्ची सार्थकता स्वीकार की। गुरुहरि के अल्प वचन को भी तन, मन, इन्द्रियां, अन्तःकरण के दायरे (कसनी) से ऊपर जाकर अध्धर झेलकर सभी के लिए एक अनुपम आदर्श रखा। स्वयं सुरुचि रखी.....

गुरुहरि योगीजी महाराज ने गोंडल में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को भागवती दीक्षा देते हुए कहा था 'महाराज ने जैसे गुणातीतानन्दस्वामी को दीक्षा दी थी वैसी आज हम प्रभुदासभाई (प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी) को दे रहे है। गुरुहरि योगीजी महाराज की कैसी अन्तर की प्रसन्नता–

अनुपम दृष्टि अपने इस लाडले सुपात्र पर होगी?

सच्चे सद्गुरु मूल अविद्या को टालकर–यानि मायिक पंचविषयों के संकल्प इत्यादि की दिशा को बदलकर जीवन को केवल प्रभुमय बना देते हैं। पारस से पारस बनाने की ऐसी असली ब्राह्मस्थिति आज इन्हें सहज सिद्ध है। स्वयं प्रभु की मूर्ति के अखंड धारक होकर आज स्वयं योगीरूप हो गये हैं और समग्र समाज में हरेक चैतन्य की कक्षा पर आकर उसकी प्रगति कराकर–लौकिक, अलौकिक और आध्यात्मिक भूमिकाओं में परम शांति और सुख प्रदान कर रहे हैं। ऐसा एक दिव्य समाज आज सभी को नजर आ रहा है–ख्याल में आ रहा है और हम सभी के सामने विकसित भी हो रहा है। संबंध में आने वाले हरेक को देह रहते हुए अक्षरधाम के सुख,शांति, आनन्द बांटने की चाहना से यह परम दिव्यभूति दिन व रात देखे बिना आज बिना किसी स्वार्थ अनथक् परिश्रम कर रही है। साधुता की कैसी चरम सीमा? अल्प संबंध वालों में भी व्यापक रूप में प्रभु को निहारे और संबंध वालों के जीवन की नींव भी–आत्मीयता व सुरुचि पर रखी !'

तो इस परम मंगलकारी शुभ अवसर पर सर्वप्रथम इनके चरणों में अन्तर की यही चाहना कि आपकी छत्रछाया हम पर अनंत वर्षों तक रहे–हम कैसे भी हैं पर आपके हैं। और आपके स्थूल व्यक्तित्व के पीछे सहजानन्द की जो परम चेतना काम कर रही है उसका अनुभव व दर्शन करें और हृदय में उस भावना को प्रगट करके अखंड सुख प्राप्त करें। तब ही सच्ची जन्मजयंती हमने मनाई कही जायेगी। दूसरे, आपने तो खूब कृपा करके अपनी गोद में बिठाये हैं तो अब हम अपने मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, इन्द्रिया अन्तःकरण की साधारण कक्षा से ऊपर उठकर आत्मीयता व सुरुचि से नये जीवन की शुरुआत करके आपकी कल्याणयोजना में सहयोगी बने। हमें जो भव्य संबंध बिना किसी व्रत, तप, साधना करे बिना ही आपने केवल अनुग्रह से कराया है उसका आनंद एक क्षण भी मंद न हो और आपके प्रति हमारी प्रीति, संबंध दिनप्रतिदिन नित्य नवीन सुरुचि रखकर दृढ़ होता जाये–यही अंतर की आरजु !

★ ★ ★

....और श्रीजी महाराज ने कहा—

.....इस देह में रहने वाला जीव रूप और कुरूप को देखता है तथा बालापन, यौवन और वृद्धता को देखता है। ऐसे अनंत पदार्थों को देखता है लेकिन अपने आपको नहीं देखता और केवल बाह्यदृष्टि से पदार्थों को देखता है; पर स्वयं अपने को नहीं देखता वही अज्ञानियों में अतिशय अज्ञानी है। और जैसे नेत्रों से अनंत प्रकार के रूप का स्वाद लेता रहता है वैसे ही कान, त्वचा, जीभ, नाक इत्यादि सभी इन्द्रियों द्वारा विषय सुख को भोगता है और जानता है। परन्तु स्वयं अपने भीतर के सुख को नहीं भोगता है न ही अपने स्वरूप को पहचानता है। वही समस्त अज्ञानियों में अतिशय अज्ञानी, पागलों में

अतिशय पागल, मूर्खों में अतिशय मूर्ख तथा समस्त नीचों में अतिशय नीच है।

.....जिसे सत्संग हुआ है उसे तो स्वयं की आत्मा का दर्शन करना अपने हाथ में ही है और किस दिन उसने अपने स्वरूप को देखने का यत्न किया और नहीं देखा? वह जीव माया के अधीन रहकर–परवश होकर स्वप्न तथा सुषप्ति अवस्था में अंतःदृष्टि के जरिये जाता है लेकिन अपनी इच्छा से किसी दिन भी अपने स्वरूप को देखने अंतःदृष्टि नहीं करता। यदि भगवान के प्रताप का विचार करके अंतःदृष्टि करे, तो वह अपने स्वरूप को अतिशय उज्जवल व प्रकाशमान देखता है। और उस प्रकाश के बीच प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान की मूर्ति को देखता है और नारद सनकादिक की भाँति सुखी भी हो जाता है। इसलिए हरिभक्त में जो भी कसर रहती है वह उसके अपने आलस से रहती है।

गढ़डा प्रथम प्रकरण-20
सोमवार, 19 दिसम्बर 1819

★ ★ ★

स्वामी की बातें

86. बड़े संत का प्रसंग निरन्तर रखना। क्या मालूम किस समय कैसी बात हो जाये? अपने मन को मारना, पर उसका कहा नहीं करना। महाराज कहते थे–'जैसे बकरे को मुँह में जो भरकर मारते हैं; वैसे ही अपने मन को मारना। और भगवान एवं बड़े साधु के पास झुक जाना। वहाँ अपनी समझ एक ओर रख देनी। वे तो खूब दयालु हैं, सो निश्चित रक्षा करेंगे।' **प्र-2,64**

87. इस लोक में दो दुःख हैं एक तो अन्नवस्त्र न मिले या न पचे। इनके अलावा तो दुःख अज्ञान का है। **प्र-2,71**

88. पिता के हृदय में स्त्री है सो लड़को की शादी कराता है और साधु के हृदय में भगवान है सो वह भगवान की मूर्ति जीव के हृदय में स्थापित करता है। **प्र-2,75**

89. जीव को भगवान के सम्मुख जाने में अंतरायरूप बड़े-बड़े दुर्ग हैं। इस लोक में परिवार, बिरादरी, माता-पिता, स्त्री, धन, इन्द्रियां और अन्तःकरण–ये बड़े दुर्ग हैं। **प्र-2,79**

90. दो प्रकार के लोग मन्दिर और मण्डल में हैं। एक तो स्वयं रहा हो और दूसरे को रखना (संभालना) पड़ता हो। इनमें से अपने आपका ख्याल कर लेना। **प्र-2,80**

91. इस जीव ने कोटि कल्प से अपनी मनमानी ही की है। वह भी 'इतने कल्प से' यूँ तो कह नहीं पायेंगे–पर अब तो इस देह से भगवान की मर्जी अनुसार कर लेना और आज्ञा मानने में प्रपंच नहीं करना व जो मिले वह सब भोगना नहीं, कुछ त्याग भी कर देना। ऐसा सबको कहा। **प्र-2,83**

92. 'भक्ति' यानि–मन्दिर की क्रिया का जैसा महत्व (प्रधानत्व) अंतर में रहता है और जैसे उसके संकल्प उठते हैं वैसे ही भगवान का महत्व (प्रधानत्व) नहीं रहता न ही संकल्प उठते हैं। ज्ञान के, उपासना के और

भगवान से प्रीति करने के भी संकल्प नहीं उठते–वह करना है। **प्र-2,85**

93. सभी किसी न किसी आधार से सुखी रहते हैं। पर भगवान व आत्मा के सहारे सुखी रहना चाहिये। अन्य सभी प्रकार के आधार छोड़ देने चाहिये। **प्र-2,88**

94. एकान्तिक साधु के सिवा और किसी को जीवात्मा से सच्ची प्रीति करनी आयेगी नहीं। दूसरे तो प्रीति करके इन्द्रियों के भावों की पुष्टि करेंगे। इससे तो आमूल उल्टा ही होगा। **प्र-2,92**

95. लाखों का त्याग करके एक भगवान को रखना। महाराज भी कहते थे कि पांडवों ने सब कुछ छोड़ कर भगवान श्री कृष्ण को रखे थे। **प्र-2,93**

ब्रह्मप्रवाह.....

पू. बापा की जैसी मर्जी होगी वैसा होता जायेगा। हमें तो भजन का जोर रखना है और सतत् अर्न्तःदृष्टि करते रहकर पुकार करनी जिससे वह सुझाव देंगे। पू. बापा के अखंड धारक बनकर.....सतर्क रहकर वरत पायें–ऐसी हमें आदत डालते जाना है। हम अक्षरधाम में ही हैं– इसलिए अब किसी भी प्रकार का भय, डर, उलझन, विक्षेप, आवेग, अभाव, अवगुण, द्रोह, निराशा, बेचैनी, सूनापन, अपूर्णता अतिरेक या उदासीनता जैसा कुछ होना ही नहीं चाहिये। अगर वह रहता है तो उतना अपना देहाभिमान आड़े आया गिना जायेगा। इसलिये मूल अज्ञान टले व प्रकृतिपुरुष से परे का अनुभव ज्ञान सरलता से सिद्ध हो वह ही गुरुकृपा से कर लेना है; तो अब बल में रहना।

प.पू. काकाजी महाराज

23-9-1966

★ ★ ★ ★ ★

व्रतोत्सवसूची

1.	दि. 4.5.87	सोमवार	प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी की जन्मजयंती
2.	दि. 7.5.87	गुरुवार	नौमी
3.	दि. 9.5.87	शनिवार	एकादशी, व्रत
4.	दि. 23.5.87	शनिवार	एकादशी, व्रत
5.	दि. 24.5.87	रविवार	ब्र.स्व. योगीजी महाराज की जयंती
6.	दि. 25.5.87	सोमवार	शिवरात्रि
7.	दि. 7.6.87	रविवार	भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन
8.	दि. 8.6.87	सोमवार	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at R.P., Printers, Shahadra, Delhi-110032